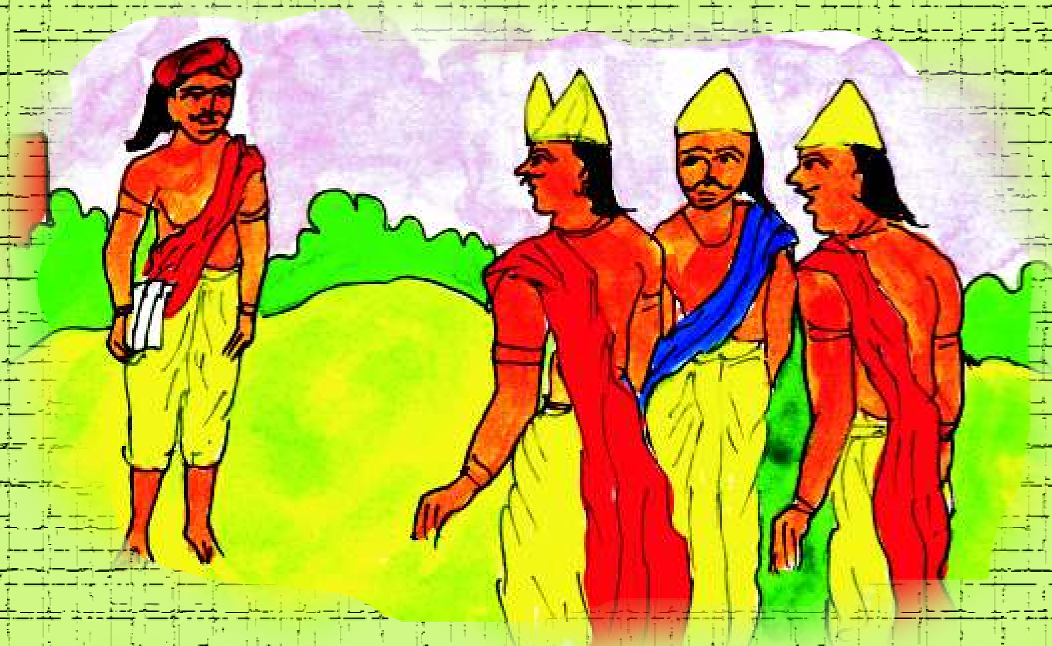
गोनू झा आ आन
मैथिली चित्रकथा



प्रीति ठाकुर

क्रम

1st Edition 2008 of Maithili Chitrakatha (Maithili Language)
by Preety Thakur narrated by Gajendra Thakur
and Published by Shruti Publication,
8/21, Ground Floor, New Rajendra Nagar, New Delhi-110008
Tel.: 011-25889656, 25889658 | Fax: 011-25889657

ISBN: 978-81-90772-99-0

Price: Rs. 100/- (INR)-for individual buyers
US $ 80 for libraries/institutions (India & abroad)

श्रुति प्रकाशन

रजिस्टर्ड ऑफिस: 8/21 भूतल, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली-110008

दूरभाष: 011-25889656-58 फैक्स: 011-25889657

website://www.shruti-publication.com
email: shruti.publication@shruti-publication.com

Printed by Ajay Arts, Delhi-110002

Distributor:
Ajay Arts, 4393/4A, 1st Floor, Ansari Road, Darya Ganj,
New Delhi 110 002 (INDIA) Tel. : 011-23288341, 09968170107

Bihar & Nepal: Dr. Umesh Mandal Mob: 09931654742

गोनू झा आ माँ दुर्गा

गोनू झा (1050-1150) करमहे सोनकरियामक जन्म दरभंगाक सिंहबाड़ा लग भरौड़ा गाममे भेलन्हि। पञ्जीमे महामहोपाध्याय धूर्तराज गोनूक नामसँ हिनकर चर्चा अछि, मुदा रहथि ई चतुर गोनू। कालीमाँक भक्त रहथि आ दुर्गाजीक तँ सभ मिथिलावासी भक्त छथिये। एक बेर दुर्गापूजाक समए ओ दुर्गाजीकेँ प्रणाम कएलन्हि तँ दुर्गाजी कहलखिन्ह....



गोनू कहलन्हि....



दुर्गामाँ मुदित भऽ गेलीह।



गोनू आ स्वर्ग

राजाक दरबारमे गोनू झाक चलती देखि बहुत गोटे हुनकासँ ईर्ष्या करए लगलाह।



दरबारमे एकटा नौआ रहथि। गोनूक संग ओहो राजाक प्रिय रहथि। गोनूसँ ओ ईर्ष्या करए लगलाह।



राजाक पिताक सारापर ओ एकटा चिट्ठी राखि देलन्हि। राजा ओहि स्थानपर प्रतिदिन जाथि। से ओ ओहि पत्रकेँ देखलन्हि। ओहिमे लिखल रहै जे स्वर्गमे पण्डितक अभावमे यज्ञ नहि भऽ पाबि रहल छै, से गोनूझाकेँ पठा देल जाए।



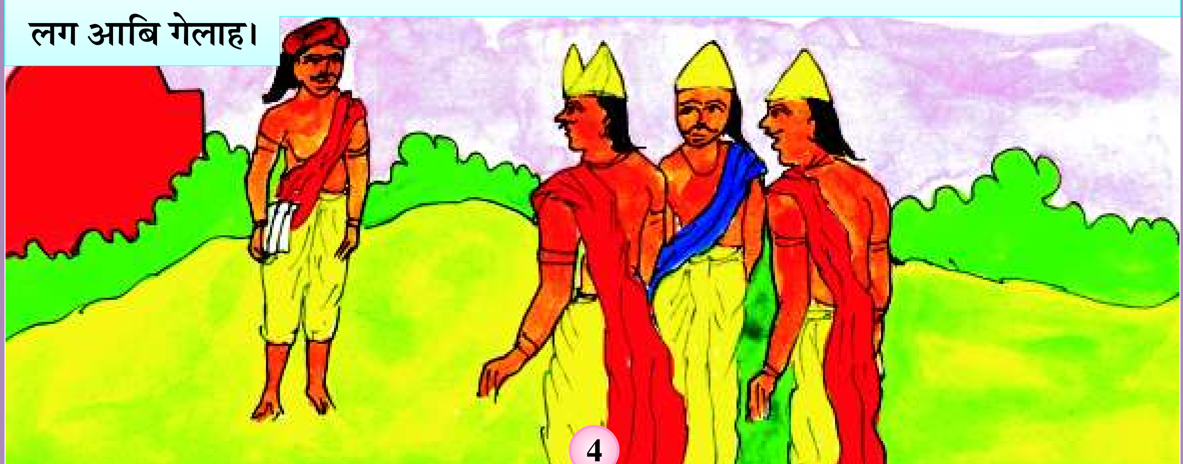
राजा दरबारमे सलाह केलन्हि तँ नौआ महराज कहलखिन्ह जे गोनूसँ पैघ पण्डित के?



मुदा गोनू धैर्यसँ काज लेलन्हि।



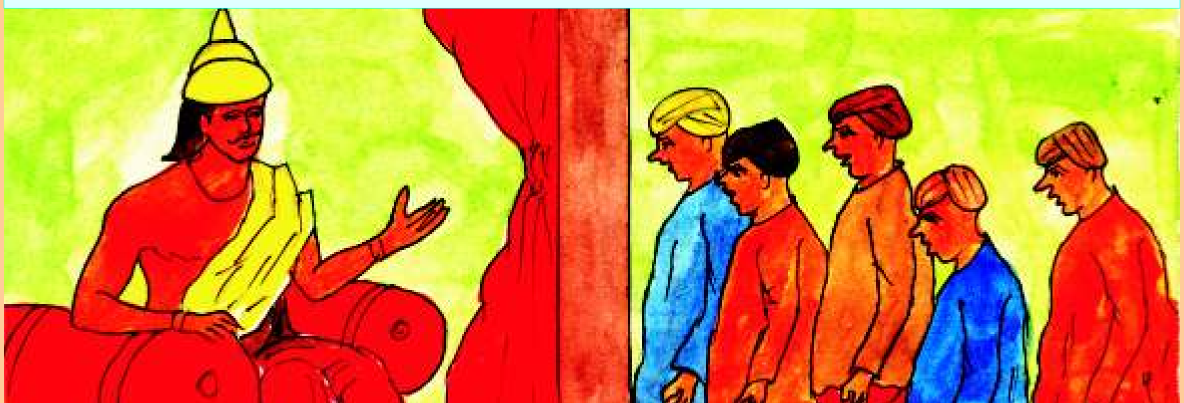
गोनू झा मास भरिमे डिम्हाक नीचाँ एकटा सुरंग बना लेलन्हि आ पोथी लऽ अग्निशाला लग आबि गेलाह।




अग्निशालामे गोनू झा प्रवेश केलन्हि। सभ बुझलक जे गोनू झा मरि जेताह मुदा ओहि सुरंगक विषयमे ककरो बुझल नहि रहै।
मुदा साल भरिक भीतरे गोनू दाढ़ी बढ़ेने आ फल लेने राजाक दरबारमे उपस्थित भेलाह।
गोनू हमर पिताक समाचार कहू। सभटा ठीक-ठाक छै ने। दाढ़ी किए बढ़ेने छी।
राजन। सभटा तँ ठीक-ठाक छै मुदा ओतए हजामक अभावमे अहाँक पिताजीक केश-दाढ़ी बड्ड पैघ भऽ गेल छन्हि। अपन दरबारसँ हजामकेँ जे पठाओल जाइत....
मुदा तखने नौआ महराज दरबारी सभक षडयंत्रक सूचना देलन्हि।
महराज, हम दरबारी सभक षडयन्त्रक फेरीमे आबि गेलहुँ। गोनू तँ चतुर छथि बचि गेलाह। हम तँ अपटी खेतमे मारल जाएब।
महराज। हिनका सभकेँ छोड़ि दियन्हु। ई साल भरिमे हम शास्त्र अध्ययन केलहुँ से हिनके सभक कृपासँ। आब ई सभ फेर ई सभ काज नहि करताह।

गोनू झा आ चोर

मिथिलाक राजा शास्त्रार्थक आयोजन केलन्हि, विद्वान सभ शास्त्रार्थ लेल जुमए लगलाह।



मुदा गोनू झा शास्त्रार्थ लेल जएबा लेल तैयार नहि।



शास्त्रार्थ भेल आ गोनू जीति गेलाह।



मुदा दरबारी सभक कहैमे आबि कऽ राजा गोनूकेँ परती भूमि दऽ देलखिन्ह।



सौँसे हल्ला भऽ गेल जे गोनू खूब पाइ लऽ कऽ दरबारसँ घुरल अछि। चोर सभ रातिमे गोनू झाक घरक पछुवारमे जुमि आएल।



चोर सभ ई सभ गप सुनैत छल। से ओ सभ रातियेमे खेतक कोर-तामेमे लागि गेल।




भोरमे गोनू खेतपर गेलाह तँ देखलन्हि जे चोर सभ सभटा खेत तामि लेने अछि। गोनूकेँ देखिते चोर सभ भागए लागल।
जे खेत बोनिहार सभ तामैसँ मना कऽ देलक से अहाँ सभ तामलहुँ। अहाँ सभकेँ तँ दोबर बोइन भेटबाक चाही। भागै किए जाइ छी?

गोनू झाक बिलाड़ि

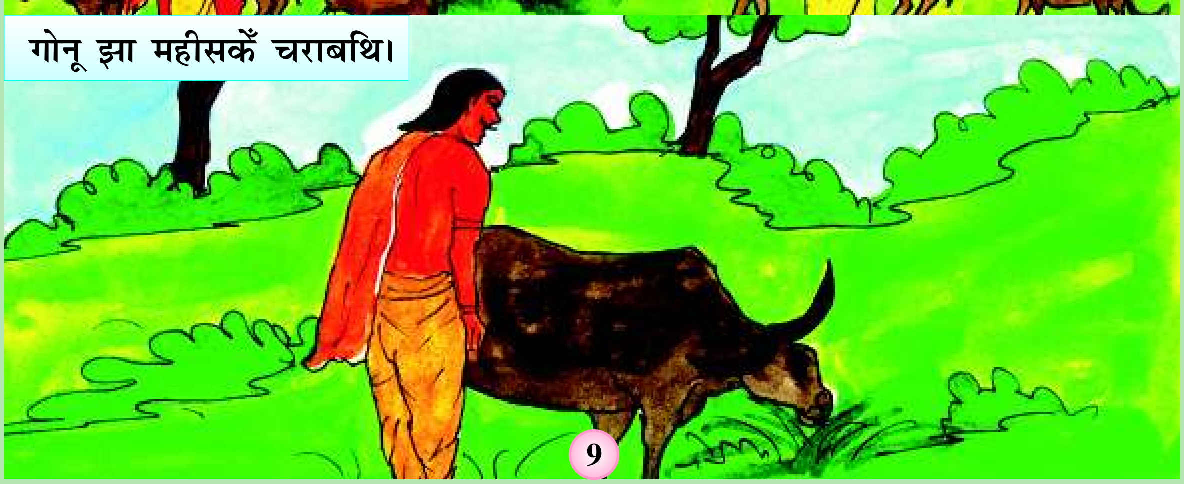
मिथिलाक राजाकेँ एक बेर फुरेलन्हि जे दरबारी सभक सत्यक परीक्षा ली।



सभकेँ एक-एकटा महीस आ एक-एकटा बिलाड़ि देल गेल। सभ अपन-अपन महीस आ बिलाड़ि लऽ कऽ बिदा भेलाह।



गोनू झा महीसकेँ चराबथि।

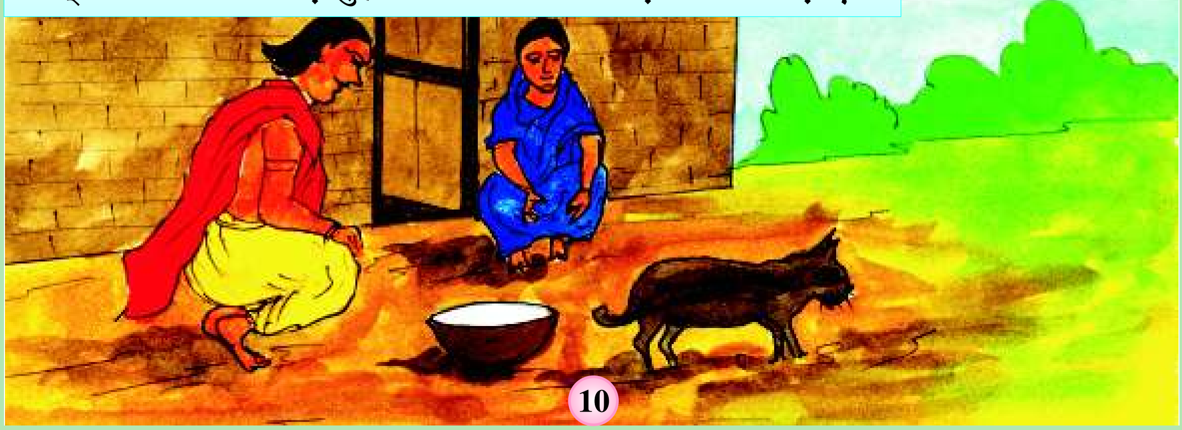


मुदा महीसक दूध सभटा बिलाड़िकेँ पिआबए पड़न्हि।





मुदा उपाए केलन्हि गोनू। कनियाँकेँ कहलखिन जे दूध गरम कऽ कए आनू। फेर दूधक बट्टामे जखने बिलाड़ि मुँह देलक आकि ओ छड़पटा कऽ पड़ाएल।



आब गोनू दुनू प्राणी दूधक पान करए लगलाह।



सएह भेल। छह मासक बाद गोनूक बिलाड़ि सभसँ पातर छल।



गोनूक बिलाड़ि दूधकेँ देखितहि पड़ा जाइत छल। कारण ओकरा बूझल रहै जे ई दूध धीपल हेतै। सभ दरबारी दंग रहि गेलाह।

गोनू झाक दूटा बड़द


एक बेर गोनू बड़दहट्टा गेलथि। हुनका दूटा अदन्त सिलेबी बड़द पसिन्न पड़ि गेलन्हि।
से ओ जोड़ा बड़द कीनि घर दिशि घुरलाह।


रस्तामे.....
कतेकमे किनलहुँ। मोल-जोल बेशी करए पड़ल।
हँ, सस्तेमे भेटि गेल तँ।
नीके केलहुँ जोड़ा बड़द कीनि लेलहुँ। हर कामै नञि हएत।

मुदा रस्तामे बाजि-बाजि गोनू दु:खी भऽ गेलाह। से ओ गामक बाधमे कुसियारक खेतमे जोड़ा-बड़दकेँ छोड़ि देलन्हि।



बिना बड़दक ओ गाम पहुँचलाह। मिथिलामे नौ-सए बरख पहिने बोनमे बाघ रहै छलै जे कहियो काल बाध-दिशि आबि जाइ छलै।



सभ गोटे भाला-गड़ाँस लऽ कऽ गोनूक कुसियारक खेत लग गेलाह।



मुदा ओतए गोनू हुनका सभकेँ देखेलन्हि अदन्त-सिलेबी जोड़ा बड़द।

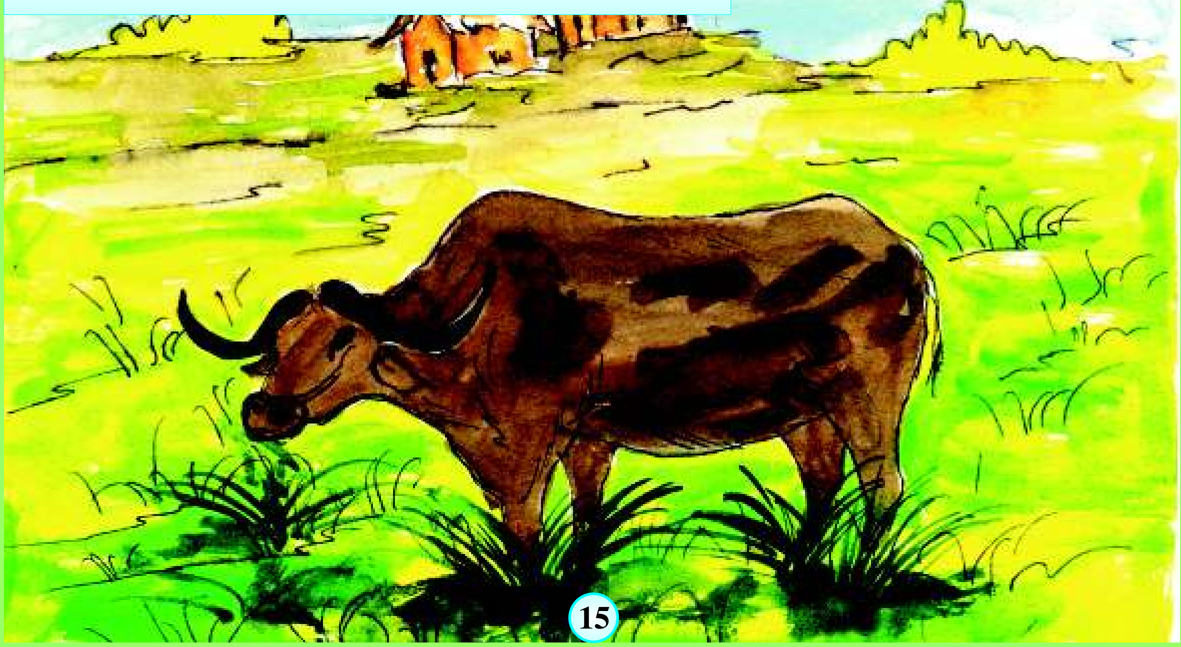


गोनू झाक महीस

गोनू झा अपन बुद्धिक बलेँ भरौड़ा गाममे प्रतिष्ठित भऽ गेलाह, लोक हुनकर प्रशंसा करन्हि। मुदा गामक जमीन्दारकेँ ई पसिन्न नहि पड़न्हि।



एक दिन गोनू झाक महीस जमीन्दारक खेत चरि गेलै।



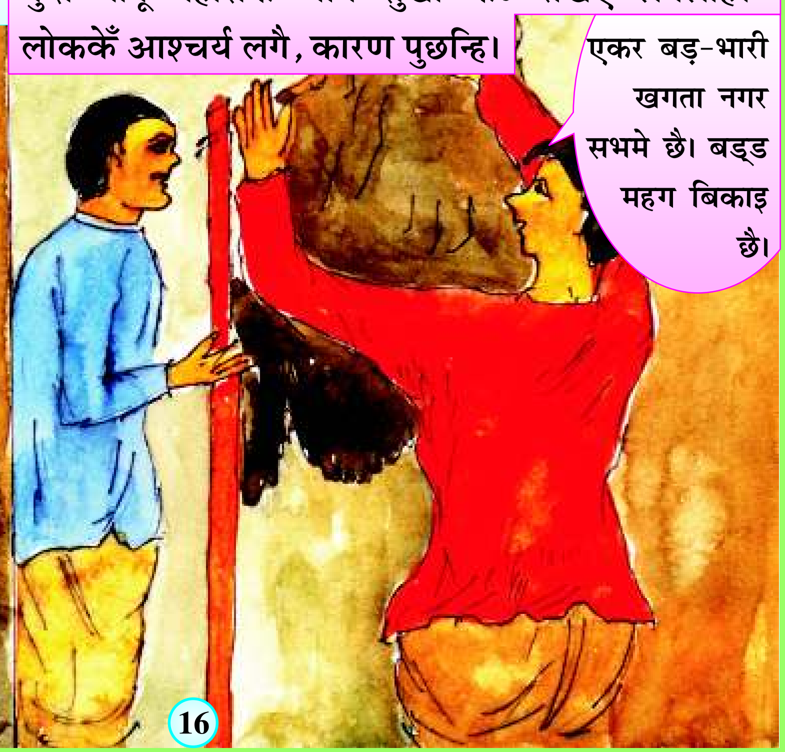
जमीन्दारक लठैत महीसकेँ मारि देलकै।



गोनूपर दुःखक पहाड़ टूटि खसलै।



मुदा गोनू महीसक चाम सुखा कऽ राखए लगलाह। लोककेँ आश्चर्य लगै, कारण पुछन्हि।



गामक सिमानपर अन्हरिया पखमे चोर सभ रातिमे एकटा झमटगर गाछक नीचाँ चोरिक समान बँटैत छलाह। गोनूकेँ से पता लगलन्हि। ओ पहिनहियेसँ महीसक चाम लेने गाछपर चढ़ि गेलाह, आ ऊपरसँ चोर सभक ऊपर ओ चाम खसा देलन्हि।



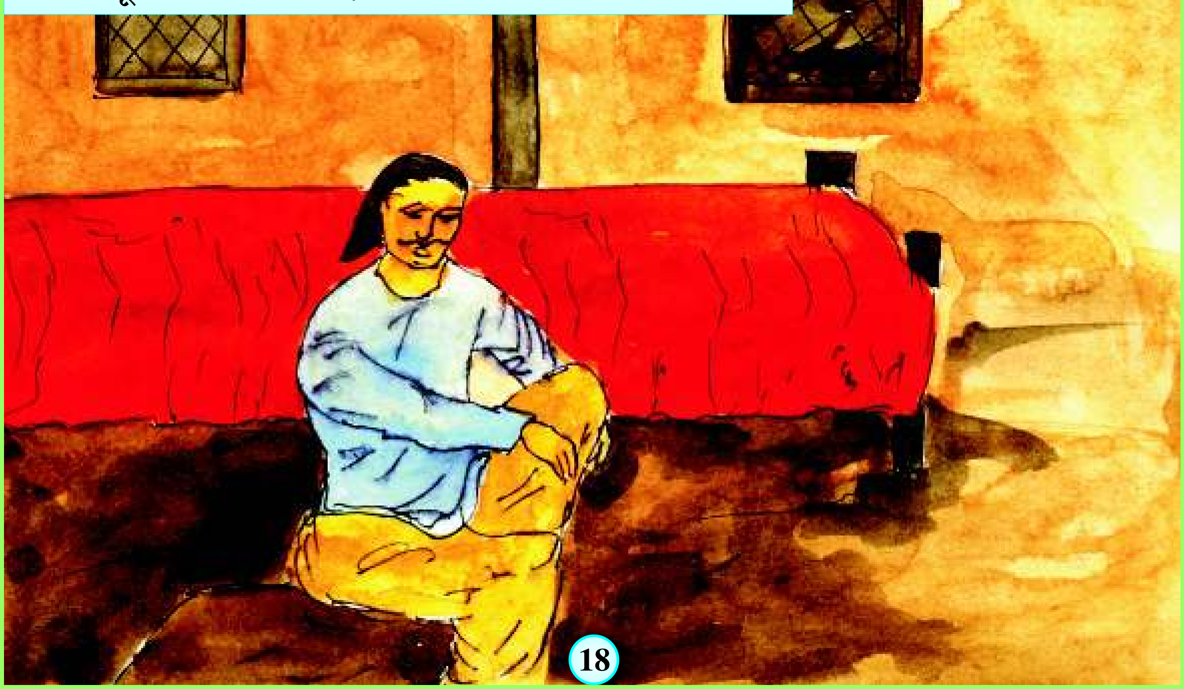
चोर सभ धन छोड़ि भागल आ सभटा खजाना लऽ गोनू घुरलाह।



गोनू खूब पाइ बाँटै लगलाह।



आ ओ जमीन्दार अपन सभटा माल मरबा देलक आ जखन कियो खरीदार नञि एलै तँ अपन मूर्खतापर सोचैत रहबाक अतिरिक्त आर की करितै।



गोनू झाक अशर्फी


गोनू झाक घरमे पाइ एलै तँ एकदिन चोर सभक जमावड़ा अन्हरिया पखमे हुनक घरक पछुआरमे भऽ गेलै।


मुदा ओ एकोरत्ती घबड़ेला नहि। चोर सभकेँ सुना कऽ कहलन्हि।
सुनलिऐ यै। आइ अपन सभटा अशर्फी हम इनारमे धऽ देलिऐ। जाबे क्यो इनारक सभटा पानि नहि निकालत, ताबे ओ धन नञि लऽ सकत।

चोर सभ भरि राति पानि निकाललक। गोनूक खेतमे पटौनी भऽ गेलन्हि। भोरमे गोनू चोर सभ लग अएलाह।



गोनू झा आ कर अधिकारीक दाढ़ी

पहिने कर अधिकारी सभ मालगुजारी असूली करबाक लेल सालमे एक बेर गाम अबै छलाह। भरौड़ामे सेहो एक बेर कर अधिकारी असूली लेल अएलाह। जकरासँ किछु नै भेटै तकरासँ अन्न-पानि आ उपहार लेमए लगलाह।



हाहाकार भऽ गेल। सभ गोनू लग पहुँचलाह।



गोनू बिदा भेलाह कर अधिकारी लग।



जखन गोनू पहुँचलाह तँ जालिम कर अधिकारी दतमनि कऽ रहल छल।



तकर बाद ओ कुरूड़ कऽ गमछासँ दाढ़ी पोछलक तँ ओकर गमछामे झड़ल एकटा केश गोनू फटाकसँ अपन हाथमे लऽ लेलन्हि।



कर अधिकारी सभकें बैसेलन्हि।



आब ई सुनबाक देरी रहै आकि सभ कर अधिकारीक दाढ़ी नोचए लागल। स्वर्ग के नहि जाए चाहत ?



कर अधिकारी भागल। आ सुनै छिऐ जे फेर गोनूक गाम भरौड़ा कहियो नञि आएल।



मुदा तखने गोनू केशकेँ फेकि देलन्हि।



गोनू झाक माए



मुदा एहि बिपतिमे सेहो लोक सभ हुनकासँ खूब खरचा करबा देबाक मनसूबा बन्हलक।



मुदा भोजक दिन गोनू सभक पातपर कुसियारक टुकड़ी पड़सि देलन्हि।



रेशमा चूहड़मल

मोकामाघाट। चूहड़मल दूधवंशी दुसाध जातिक, पिता राजवंसी आ माता अंजनी, आ काका बैसीराय। रेशमा भूमिहार ब्राह्मण जातिक, अजबी सिंह आ हुस्नाक बेटी, अजय सिंहक बहिन। दुनूक भैँट भेलै गंगातटपर, जखन रेशमा दंगल जीति कऽ अबैत चूहड़मलकेँ देखलक। प्रेमकथाक भेल प्रारम्भ।



कोनो ने कोनो बहन्ने रेशमा चूहड़मलसँ भैँट करए लागल।



सगरे मोकामामे हल्ला भऽ गेल जे रेशमा आ चूहड़मलक बीच प्रेम भऽ गेल अछि। अद्‌भुत घटना ने देखल, ने सुनल। रेशमाकेँ घरक लोक बुझेलन्हि मुदा ओ गप नहि मानलक।



तखन पहरा पड़ि गेल रेशमापर।



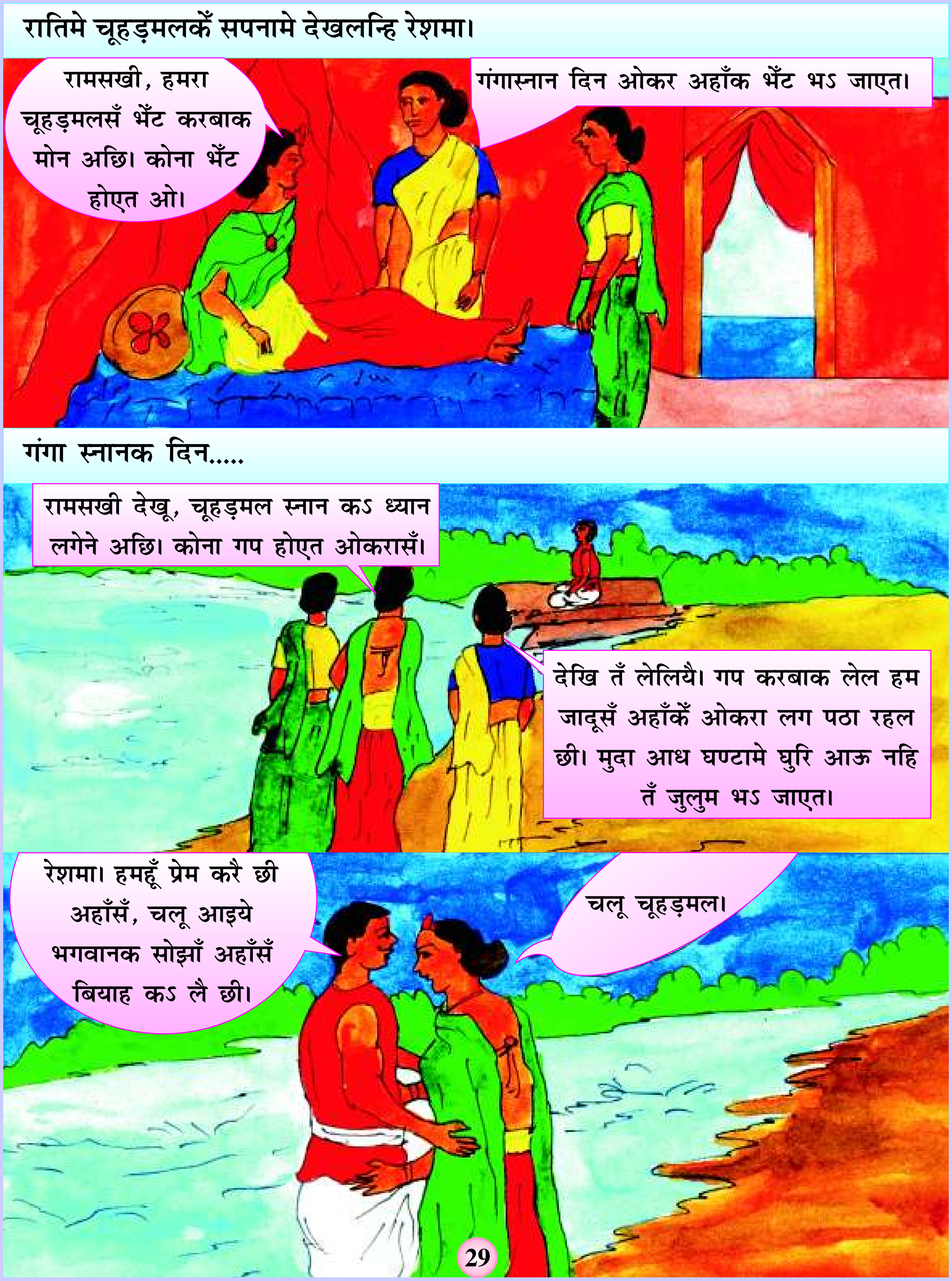
अजय सिंह मन्ने खाँ आ गड़ेरी रामजीतकेँ बजेलन्हि।



मुदा चूहड़मल मन्ने खाँ आ रामजीत गड़ेरीक गरदनि काटि कऽ गंगाजीमे फेकि देलक।




अजय सिंह तामसे बिक्ख।
दुसधटोलीकेँ खतम करू।
डंका बजा देल गेल।
डंकाक अबाज सुनि रेशमा चिन्तित भऽ गेलीह।
ककरापर चढ़ाइ भऽ रहल अछि सेवक।
चूहड़मलपर।
अजबी सिंह लग गेलीह रेशमा।
चूहड़मलकेँ छोड़ि दियौ बाबूजी नञि तँ हम अपन प्राण दऽ देब।
मन्त्री सेनापति आ अजय सिंह! तीनू गोटे सुनू। ई आक्रमण रोकि देल जाए।



रातिमे चूहड़मलकेँ सपनामे देखलन्हि रेशमा।
रामसखी, हमरा चूहड़मलसँ भेँट करबाक मोन अछि। कोना भेँट होएत ओ।
गंगास्नान दिन ओकर अहाँक भेँट भऽ जाएत।
गंगा स्नानक दिन.....
रामसखी देखू, चूहड़मल स्नान कऽ ध्यान लगेने अछि। कोना गप होएत ओकरासँ।
देखि तँ लेलियै। गप करबाक लेल हम जादूसँ अहाँकेँ ओकरा लग पठा रहल छी। मुदा आध घण्टामे घुरि आऊ नहि तँ जुलुम भऽ जाएत।
रेशमा। हमहूँ प्रेम करै छी अहाँसँ, चलू आइये भगवानक सोझाँ अहाँसँ बियाह कऽ लै छी।
चलू चूहड़मल।

बिदा भेल चूहड़मल, रेशमाकेँ लऽ कऽ।



आ मन्दिरमे दुनू गोटे बियाह कऽ लेलन्हि।



मुदा बाहरमे राजाक सिपाही सभ घेरि लेलकन्हि। मुदा चूहड़मल सभकेँ मारि कऽ भगा देलन्हि।



मुदा सिपाही कलुआ रेशमाकेँ लऽ कऽ भागि गेल।



पुजेगरी कहलक......



मुदा फेर ओकर घोड़ा आ ओ माने चूहड़मल मारल गेल। मोकामाटालक लग रेशमा चूहड़मल मन्दिरपर आइयो मेला लागैए आ कतेक गोटेकेँ चूहड़मलक अबाज सेहो सुना जाइत छन्हि... रेशमा



नैका बनिजारा


तिरहुतमे वासमपुर ड्योढ़ीमे नैका रहै छथि माए मन्दोदरिक संग, सासुर छन्हि अवधपुर मे। बनिजार करए लेल प्रयत्नशील छथि।
माए, हम वाणिज्य लेल मोरंग जाए चाहै छी। हमरा अनुमति दिअ।
नञि बेटा। अहाँ ओतए कोना जाएब, कोना की करब? एतहि रहू।
मुदा नैका नञि मानै छथि। तखन माए हुनका पाइ दै छथिन्ह, यात्राक तैयारी लेल।
एम्हर अवधपुरमे नैकाक पत्नी बारी रहै छथि। हुनका पता लगै छन्हि जे नैका बनिजार लेल जा रहल छथि।
नौआ भैया। ई चिट्ठी नैकाकेँ दऽ अबियौ तिरहुतमे। कहबन्हि जे हमरा आबि कऽ लिआनु करा जाथि।

नैकाकेँ चिट्ठी भेटलै आ ओ बारी लग गेल।



नैका अपन ससुर जादू सेठसँ तीनू बौस्तु लऽ कऽ पत्नी बारीक संग अवधपुरसँ तिरहुत अपन ठाम वासमपुर ड्योढ़ी आबि जाइ छथि।



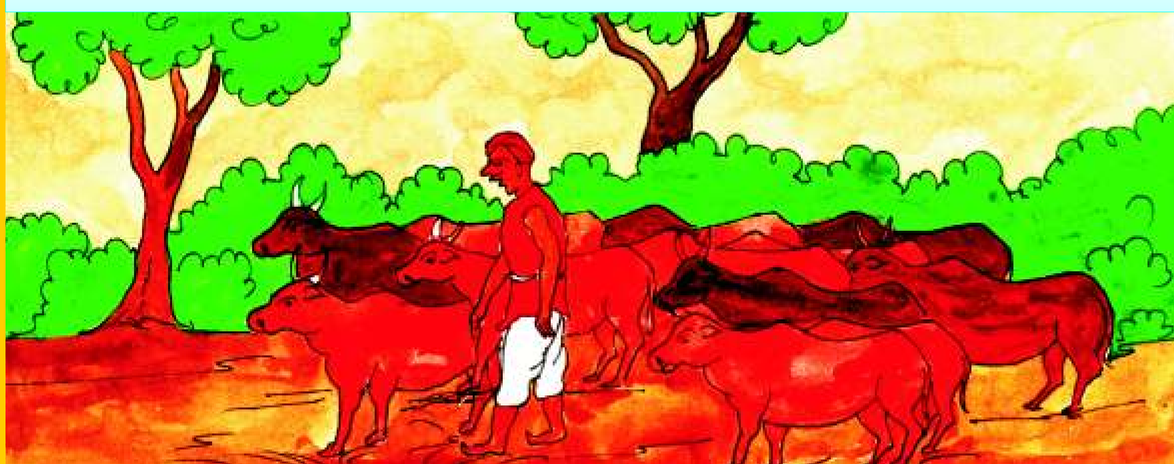
नैका बनिजार करबा लेल बिदा होइत अछि आ रातिमे एक ठाम डेरा खसबैत अछि, लालबाग धुरिया लग। ओतहि अशोक गाछपर छथि विध-विधाता।



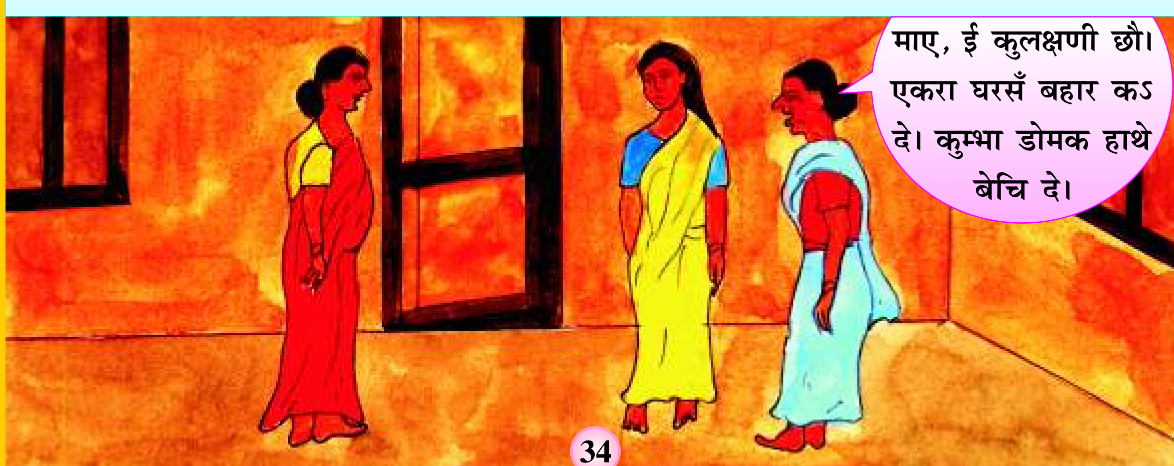
नैका ई सुनि चोट्टे असगरे घुरि जाइए आ पत्नी संग राति बितबैए। नैकाक बहिन फूलमती आ माए मन्दोदरिकेँ ई गप नहि बूझल होइछै।



भोर भेलासँ पूर्व नैका मोरंग लेल बिदा भऽ जाइए।



एम्हर बारीमे गर्भक लक्षण अबै छै।



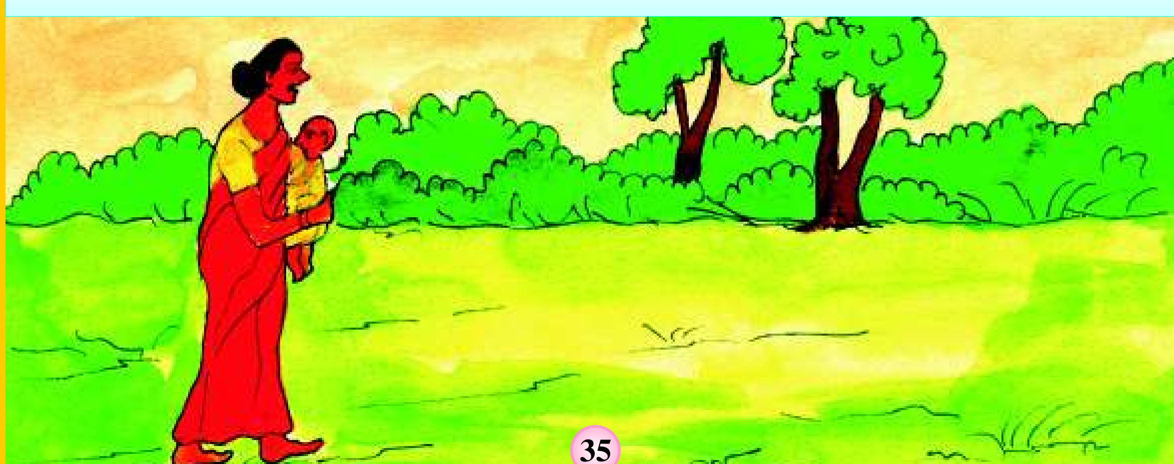
बारीकेँ कुम्भा डोम कीनि लैत अछि।



कुम्भा बारीकेँ डिल्ली लऽ अनैत अछि।



मुदा बारी मुक्त भऽ वासमपुर बिदा होइ छथि।



वासिमपुरमे बारी दोकान खोलि लैत छथि।



बारह बर्खक बाद नैका घुरैत अछि तँ दोकानेपर बारीसँ ओकर भेँट भऽ जाइत छैक।



ओसभ गप बूझि बारीकेँ वासिमपुर ड्योढ़ी आनि लैत अछि नैका।



भगता ज्योति पँजियार


पम्पीपुर गाम। धर्मराजक भक्त ज्योति पँजियार बड्ड भारी तांत्रिक। एक बेर धर्मराज भेष बदलि ज्योति पँजियारक घरपर अएलाह, मिक्षाटन लेल। ज्योति पँजियारक माए भिक्षा लऽ कऽ आयलि।
हम खाली ज्योति पँजियारक हाथे भिक्षा लेब।
मुदा ओ तँ अपन कनियाँ लखिमाक संगे गहमर बना रहल छथि। सोर करै छियन्हि।
ज्योति गहमर बना रहल रहथि।
ज्योति। एकटा योगी आएल छथि। अहींक हाथे भिक्षा लेताह।
हम गहमर बनेने बिना नहि आबि सकै छी माए।
योगी धर्मराज तमसा गेलाह।
सुनलिऐ। ओकरा हमर स्राप छै, कुष्ठ फूटि जएतैक ओकरा। दरिद्र भऽ जाएत ओ।

सएह भेलै। ज्योति पँजियार गाम छोड़ि बहिन ओहिठाम गेल।



बहिन भेँट नहि केलन्हि।



ज्योति पँजियार चकित।



लगवार आ ओकर कनियाँ स्वागत केलकन्हि ज्योति पँजियारक।




लगवार एकटा तांत्रिक-वैद्यकेँ बजेलन्हि।
कदली बोन जाऊ। गहमर बनाऊ, बाँससँ धर्मराजक घर बनाऊ, 12 वर्ष धर्मराजक अराधना करू।
ठीक छै। हम एखने बिदा होइ छी।
बिदा भेलाह ज्योति पँजियार।
सोझाँमे शमिक गाछ अछि। कनेक काल ओकर छाहमे बैसै छी।
हे, हे। ठाढ़ भऽ जाऊ। अहाँक प्रभावसँ हम सुखा जाएब। ठहरि जाऊ।

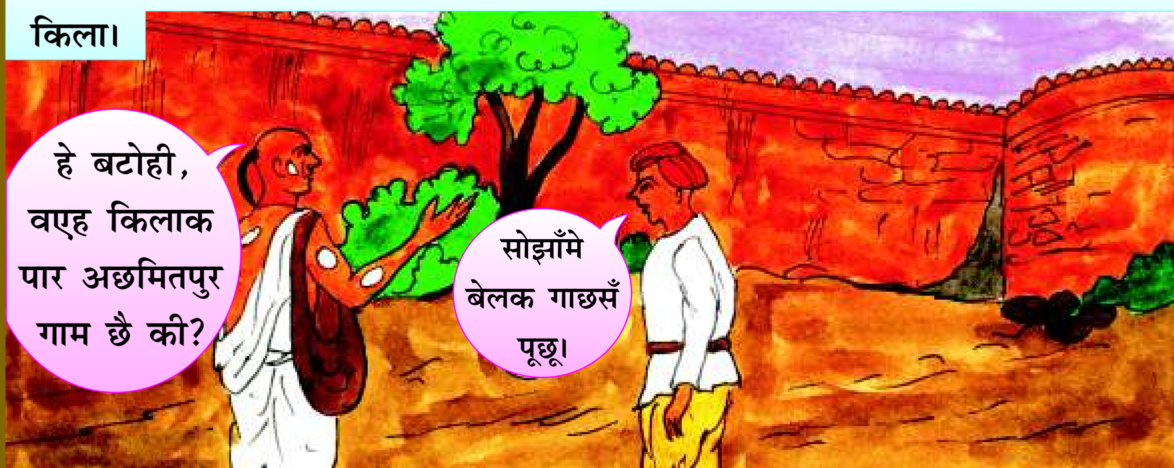


ज्योति पँजियार शमिक गाछक गपपर ध्यान नञि देलन्हि। मुदा सएह भेल। शमिक गाछ सुखा गेल।
ओतएसँ बिदा भेलाह ज्योति पँजियार। प्यासे कंठ सुखाइत छलन्हि। रस्तामे एकटा कोइली देखलन्हि।
हे कोइली, हे कोइली। कनी हमरा पानि पिया दितहुँ तँ हमर जान बचि जइतए।
ठीक छै, देखै छी।
मुदा ओ उड़ल, मुदा बिर्रो आएल आ ओ लटुआ कऽ खसि पड़ल आ मरि गेल।
सोझाँमे कदली बोन आबि गेल। बिर्रो ज्योति पँजियारकेँ कदली बोन धरि पहुँचा देलकै।
एतै गहमर बनबै छी। मुदा पियासे बड्ड जोर लागल अछि।

तखने सोझाँ गाए-बाछा सभकेँ रोमने एकटा चरबाहकेँ देखलन्हि ज्योति पँजियार। ओ चरबाह नञि धर्मराज रहथि।



कनेक आगू गेलापर धर्मराज भौरा बनि निपत्ता भऽ गेलाह। सोझाँ छल चइयां राजाक किला।



बटोही परबा बनि उड़ि गेल। सोझाँ बेलक पातपर किछु लिखल छल।



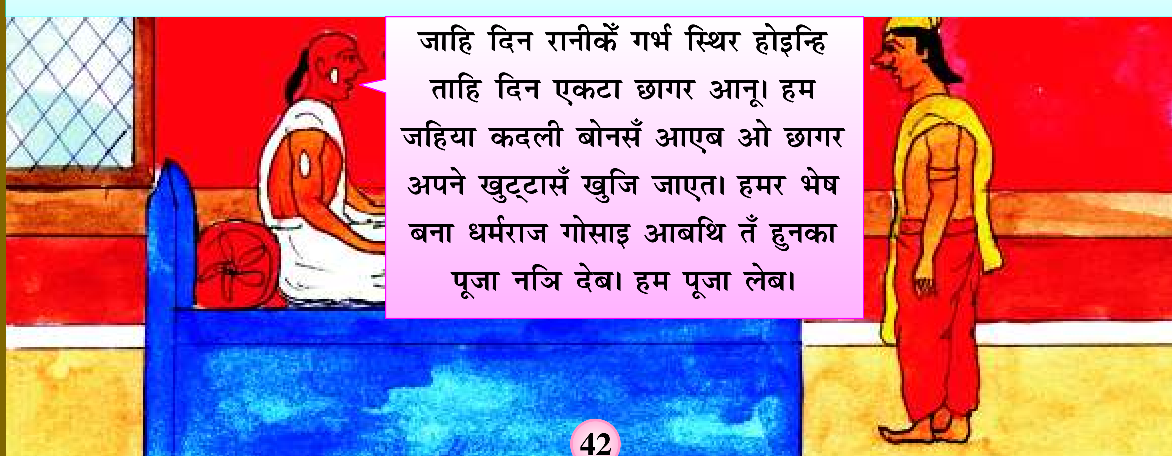
किलाक फाटक खुजि गेल आ राजा रानी कल जोड़ने ठाढ़।

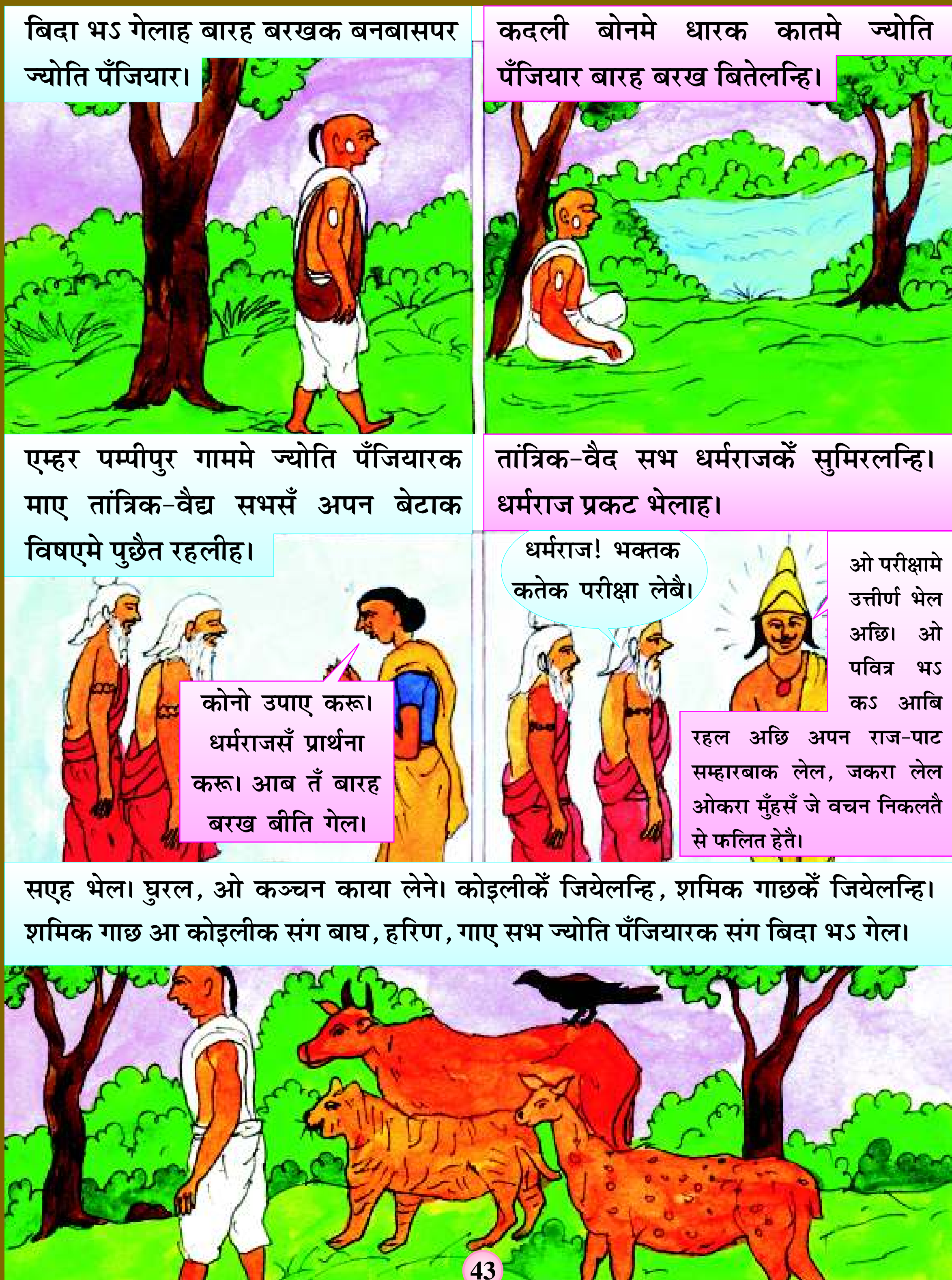


पएर हाथ धोए भोजनपर बैसलाह ज्योति पँजियार।



भोरमे सुति-उठि राजाकेँ बजबेलन्हि ज्योति पँजियार।




बिदा भऽ गेलाह बारह बरखक बनबासपर ज्योति पँजियार।
कदली बोनमे धारक कातमे ज्योति पँजियार बारह बरख बितेलन्हि।
एम्हर पम्पीपुर गाममे ज्योति पँजियारक माए तांत्रिक-वैद्य सभसँ अपन बेटाक विषएमे पुछैत रहलीह।
कोनो उपाए करू। धर्मराजसँ प्रार्थना करू। आब तँ बारह बरख बीति गेल।
तांत्रिक-वैद सभ धर्मराजकेँ सुमिरलन्हि। धर्मराज प्रकट भेलाह।
धर्मराज! भक्तक कतेक परीक्षा लेबै।
ओ परीक्षामे उत्तीर्ण भेल अछि। ओ पवित्र भऽ कऽ आबि रहल अछि अपन राज-पाट सम्हारबाक लेल, जकरा लेल ओकरा मुँहसँ जे वचन निकलतै से फलित हेतै।
सएह भेल। घुरल, ओ कञ्चन काया लेने। कोइलीकेँ जियेलन्हि, शमिक गाछकेँ जियेलन्हि। शमिक गाछ आ कोइलीक संग बाघ, हरिण, गाए सभ ज्योति पँजियारक संग बिदा भऽ गेल।

अछमितपुर गाममे राजा-रानीकेँ दु:खी देखलन्हि ज्योति पँजियार।



ज्योति पँजियारक प्रतापसँ राजाक बेटा आ छागर-पाठा सभ जी गेल। सभ काज सम्पन्न कऽ पम्पीपुर गाम पहुँचलाह ज्योति पँजियार।



गमछामे गहबर बन्हने भगता ज्योति पँजियार घर पहुँचलाह।



महुआ घटवारिन


दारूपीबा बापक बेटी महुआ। घाटपर लोककेँ उतारए। सतमाए बड्ड उछन्नर दै। बड्ड काज कराबै।
बरखा रातिमे वणिककेँ घाटसँ आनैले कहलक सतमाए, महुआ दु:खी।
मुदा गेल नहि घाटपर महुआ। फूलमती लग चलि गेलि।
की करी हम फूलमती?
मोरंगसँ अबैए बला छौ तोहर प्रेमी। ओकर प्रतीक्षामे दिन कटि जएतौ।

भोरमे घर पहुँचलि महुआ। गारि–मारि फेर पड़लै।



तखने महुआक बापो अएलैक।



मुदा माए महुआक बापकेँ लात मारि भगा देलकै।



बापक दुःख देखि महुआ मानि गेलि, घाटपर जाएत ओ। मुदा सतमाए तँ एहिबेर बेचिये देलक महुआकेँ, ओकरा बुझलो नहि।



मुदा नाहपर चढ़िते ओकरा हाथसँ पतवारि छीनि लेल गेल। सेठ ओकरा पकड़ए चाहलक तँ महुआ प्रतिरोधा कएलक



ई सुनिते महुआ धारमे फाँगि गेलि। सेठक दोसर सिपाही ओकरासँ प्रेम करए लागल छल। ओ देखैत रहल महुआकेँ।



आ महुआकेँ ओ बचाबऽ चाहलक।



मुदा कौशिकी धारमे के बाँचत। ने बाँचल महुआ ने ओ सिपाही। बाँचल अछि तँ से अछि मात्र महुआक स्मृति।

राजा सलहेस

सलहेस दूधवंशी जातिक, मोरंगक, बलगर। लोक हुनका राजा सलहेस कहन्हि। दवना मालिन हुनकासँ प्रेम करैत छलीह। राजदरबारमे जाइत छलि दवना।

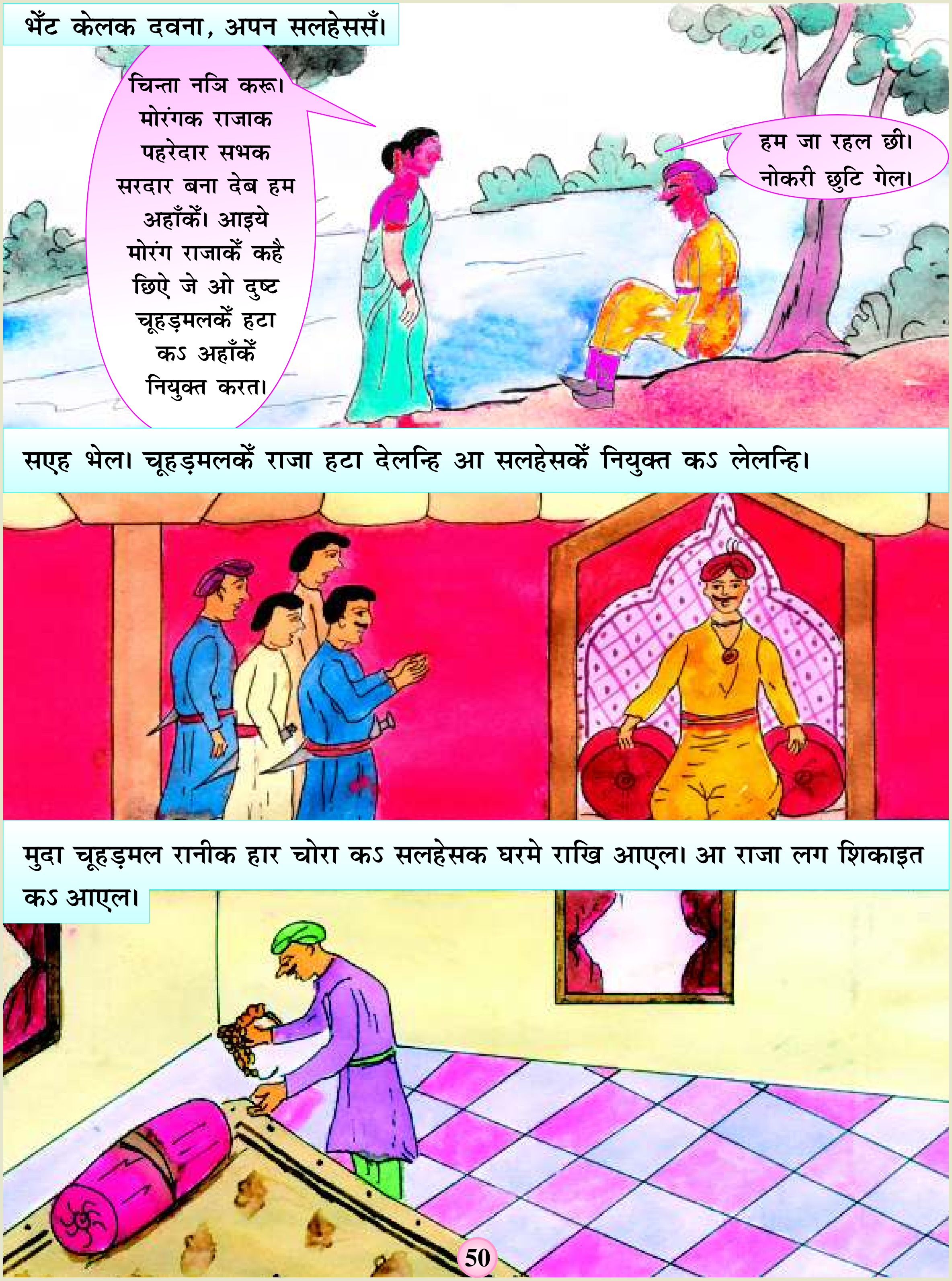


नौरंग बहादुर थापा रहथि राजाक जमीन्दार। सलेहसक विरूद्ध कियो हुनकर कान भरि देलकन्हि।



सलहेस नोकरी छोड़ि देलन्हि।




भेँट केलक दवना, अपन सलहेससँ।
हम जा रहल छी। नोकरी छुटि गेल।
चिन्ता नञि करू। मोरंगक राजाक पहरेदार सभक सरदार बना देब हम अहाँकेँ। आइये मोरंग राजाकेँ कहै छिऐ जे ओ दुष्ट चूहड़मलकेँ हटा कऽ अहाँकेँ नियुक्त करत।
सएह भेल। चूहड़मलकेँ राजा हटा देलन्हि आ सलहेसकेँ नियुक्त कऽ लेलन्हि।
मुदा चूहड़मल रानीक हार चोरा कऽ सलहेसक घरमे राखि आएल। आ राजा लग शिकाइत कऽ आएल।

तहकीकात भेल। सलहेस दोषी!



जहलमे भेँट करए गेलि दवना।



सएह भेल। चूहड़मल कल जोड़ने दवना लग आएल।



राजाक दरबारमे चूहड़मलक पेशी भेल।



सएह भेल। फेर सलहेस आ दवनाक बियाह भऽ गेल आ सभ हँसी-खुशी रहए लगलाह।

छेछन महराज



डोम जातिक छेछन बड्ड पराक्रमी रहथि।
हे भाइ। हम सभ गेल रही सहिदापुर। ओतुक्का सरदार मानिकचन्द बड्ड बलगर अछि। बिना ओकरा हरेने अहाँक पराक्रम अपूर्ण अछि।
हम आइये अपन बारह पसेरीक कत्ता लऽ कऽ सहिदापुर लेल बिदा होइ छी।
आ बिदा भऽ गेलाह छेछन।
रस्तामे एकटा बूढ़ी भेटलन्हि छेछनकेँ।
सहिदापुरमे एकटा अखराहा खुनने अछि मानिकचन्द। ओतए एकटा डंका राखल छै। ओहिपर चोट करब तँ मानिकचन्दक सुग्गर चटियासँ लड़ए पड़त। चटियाकेँ हराएब तँ मानिकचन्दसँ लड़ए पड़त। मानिकचन्दकेँ हराएब तँ ओकर बहीन पनमासँ अहाँक बियाह होएत।


सहिदापुरमे डंकापर चोट देलन्हि छेछन।
चटियाकँ एक्के बेरमे हरा देलन्हि छेछन।
आब हमरासँ लड़ए पड़त अहाँकँ।
बड़का दंगल। मुदा छेछन जीति गेलाह।

पनमा आ छेछनक बियाह भेल।



मुदा छेछन गाममे बँसबिट्टीसँ बाँस काटए लगलाह। यादव लोकनिक लोकदेव कृष्णारामक बँसबिट्टीसँ सेहो एक बेर ओ बाँस काटि लेलन्हि। कृष्णाराम सुबरन हाथीपर चढ़ि छेछनक गाम अएलाह।



ओतए अपन बँसबिट्टीक बाँसपर पनमा आ छेछनकेँ सुतल देखि कृष्णारामकेँ पित्त लहरि गेलन्हि। छेछनक कत्ता बगलमे रहै।



हाथी कत्ताकँ सूढ़सँ उठेलक आ छेछनक गरदनिपर राखलक, हाथी अपन एकटा पएर ओहि कत्तापर राखि देलक।।

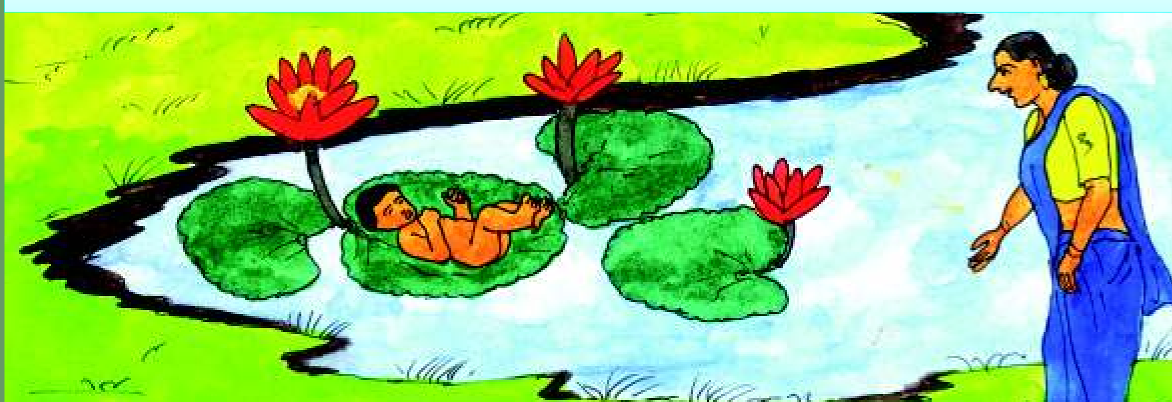


कालिदास

कालिदासक कथा मिथिलामे प्रचलित अछि आ एतए यादव लोकनिक अनेक कुलमे हिनकर पूजा सेहो होइत अछि। सुनै छिऐ एकटा स्त्री अमरीता माँ कालीक भगतिन रहथि। कमलदहसँ कमल आनि सभ दिन उच्चैठ भगवतीकँ अर्पित करथि।



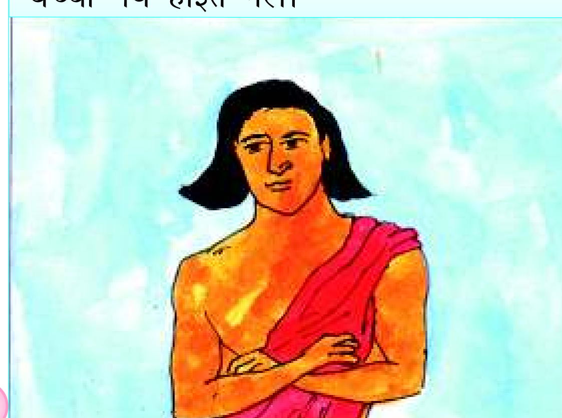
एक दिनक गप अछि। कमलदहमे कमलक पातपर एकटा बच्चाकँ हेलैत देखलनि अमरीता।

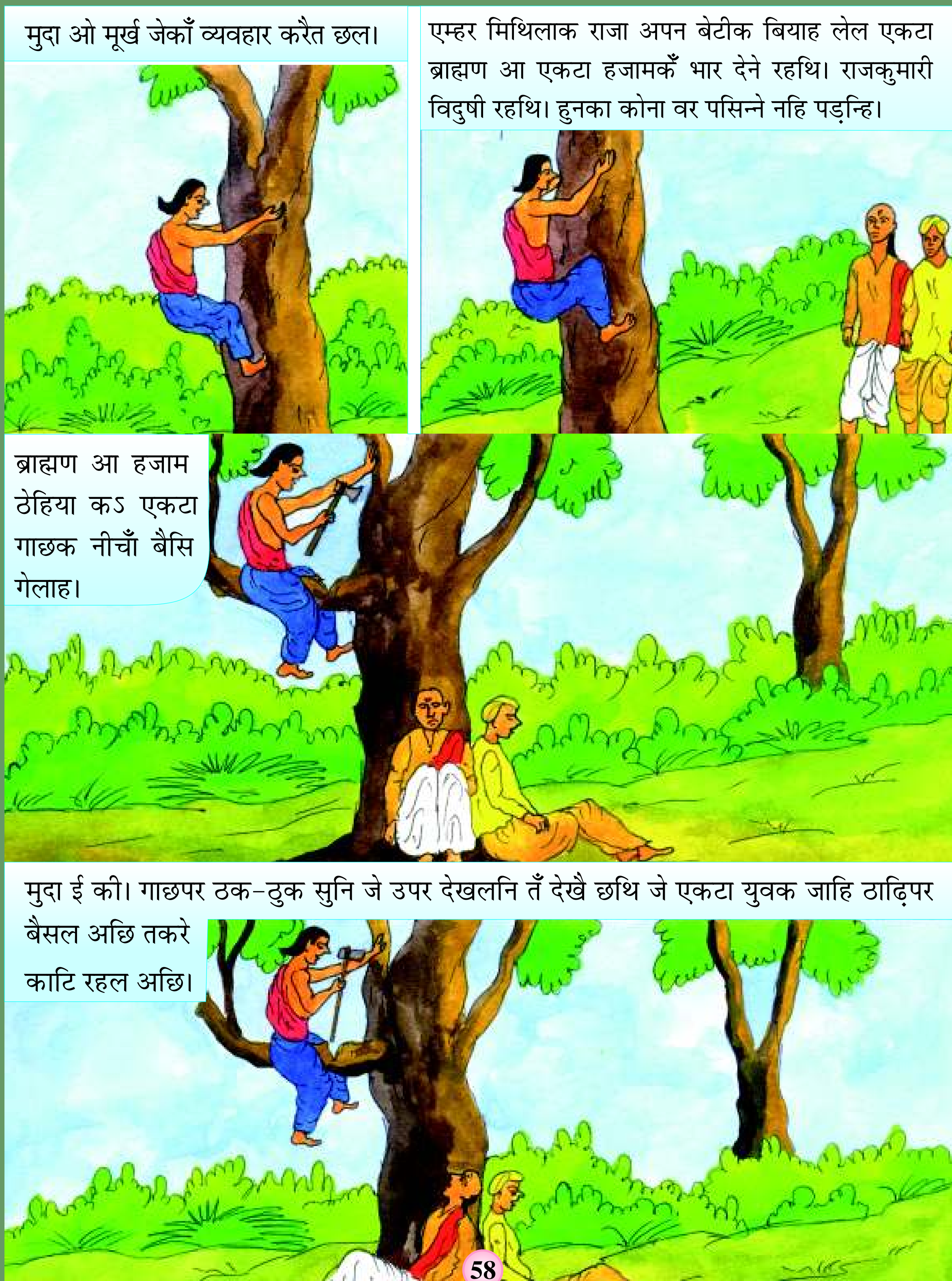


अमरीताकँ बच्चा नहि छलन्हि। ओ ओहि बच्चाकँ गामपर आनि पोसए लगलीह।



बच्चा पैघ होइत गेल।




मुदा ओ मूर्ख जेकाँ व्यवहार करैत छल।
एम्हर मिथिलाक राजा अपन बेटीक बियाह लेल एकटा ब्राह्मण आ एकटा हजामकेँ भार देने रहथि। राजकुमारी विदुषी रहथि। हुनका कोना वर पसिन्ने नहि पड़न्हि।
ब्राह्मण आ हजाम ठेहिया कऽ एकटा गाछक नीचाँ बैसि गेलाह।
मुदा ई की। गाछपर ठक-ठुक सुनि जे उपर देखलनि तँ देखै छथि जे एकटा युवक जाहि ठाढ़िपर बैसल अछि तकरे काटि रहल अछि।


ओहि युवककँ पोल्हा कऽ ओ सभ नीचाँ उतारलनि आ ओकर परिवारक विषयमे पुछलनि।
ओ युवक घुरि कऽ गाम दिस चलि गेल।
ब्राह्मण आ हजाम आपसमे परामर्श केलनि।
एहि युवकसँ पैघ मूर्ख एहि पृथ्वीपर कियो आर नहि भेटत।
चलू एकर माए अमरीताकँ पटिया कऽ एकर विवाह राजकुमारीसँ करेबाक लेल तैयार करै छी।
ब्राह्मण आ हजाम अमरीता लग पहुँचलाह।
अहाँक पुत्रक विवाह राजकुमारीसँ जे भऽ जाएत तँ अहाँक दिन-दुनियाँ किछु आर भऽ जाएत। एहि युवकक सेहो भाग्य खुजि जएतैक, विद्या अर्थ सभ बौस्तु प्राप्त होएतैक। मात्र किछु दिन एकरा मौन धारण करए पड़तैक।
लऽ जाऊ एकरा, कमलदहमे भेटल रहए, नञि जानि एकरा भाग्यमे की छै।

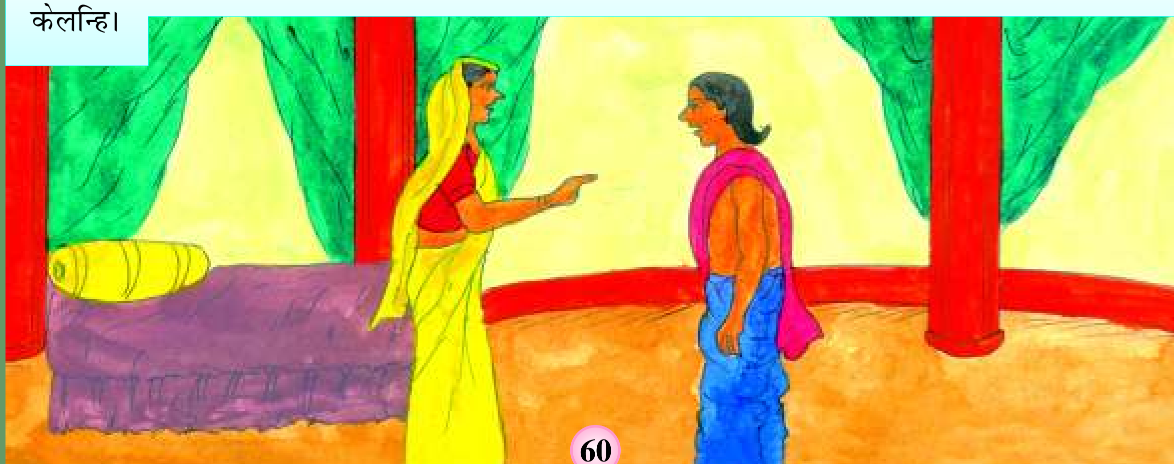
ओहि युवककेँ राजाक दरबारमे आनल गेल। ओकर ततेक प्रशंसा भेलै जे राजा ओकरा संग अपन बेटीक विवाह लेल तैयार भऽ गेलाह।

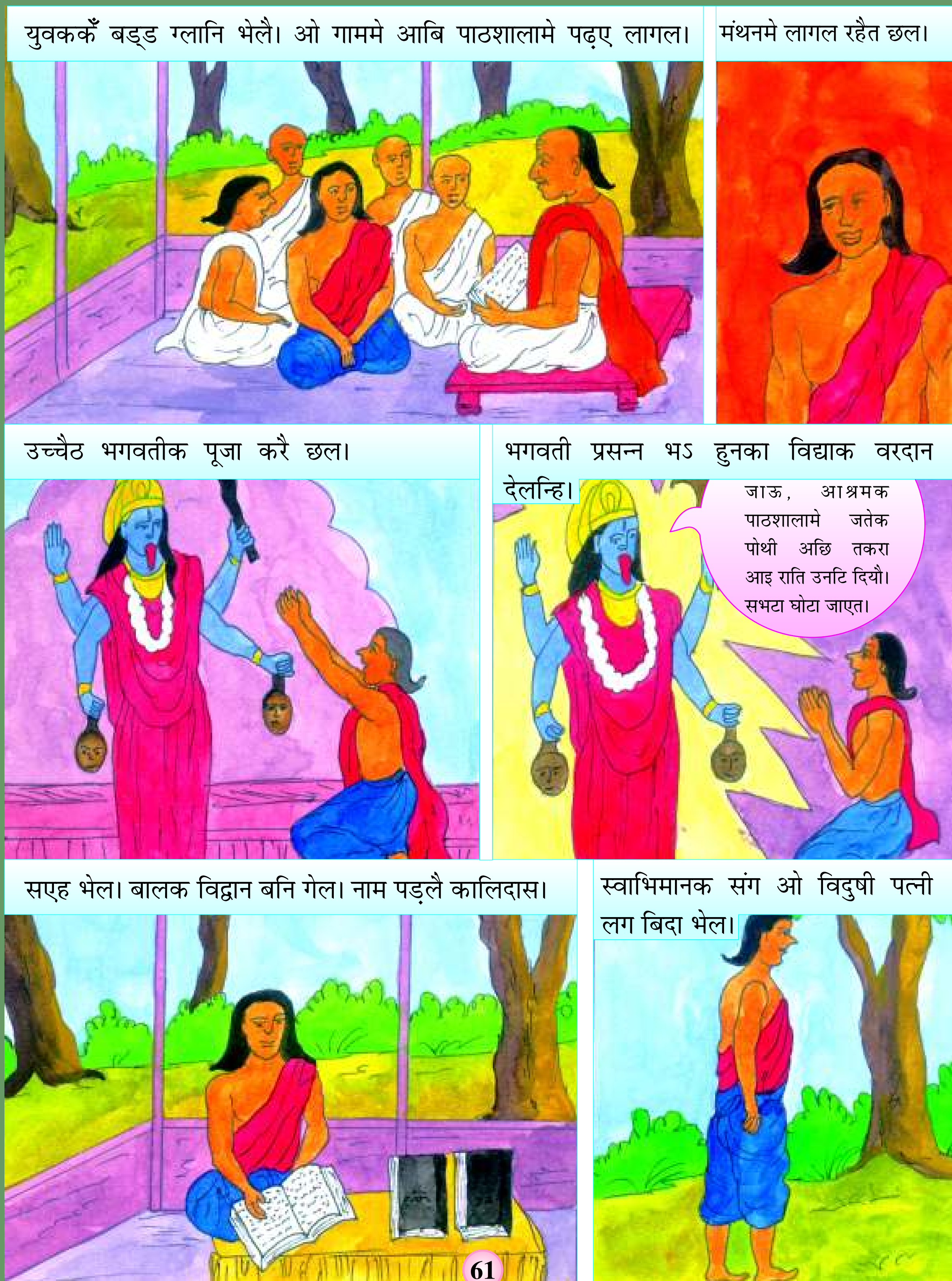


विवाह भैयो गेल।



मुदा राजकुमारी विदुषी रहथि। ओ बुझि गेलीह जे युवक प्रचंड मूर्ख अछि, से ओ ओकर बड्ड फज्झति केलन्हि।




युवककेँ बड्ड ग्लानि भेलै। ओ गाममे आबि पाठशालामे पढ़ए लागल।
मंथनमे लागल रहैत छल।
उच्चैठ भगवतीक पूजा करै छल।
भगवती प्रसन्न भऽ हुनका विद्याक वरदान देलन्हि।
जाऊ, आश्रमक पाठशालामे जतेक पोथी अछि तकरा आइ राति उनटि दियौ। सभटा घोटा जाएत।
सएह भेल। बालक विद्वान बनि गेल। नाम पड़लै कालिदास।
स्वाभिमानक संग ओ विदुषी पत्नी लग बिदा भेल।

श्रुति प्रकाशन
कार्यालयः 8/21, न्यू राजेन्द्र नगर, दिल्ली–110008
दूरभाषः (011) 25886656–58 फैक्सः (011) 25886657
website: http://www.shruti-publication.com
email: shruti.publication@shruti-publication.com

ISBN: 978-81-90772-99-0
9788190772990
Rs. 100/- US $80